कनेक्ट

वर्ष.- 5, अंक-2 फ़रवरी-2019

70 वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर माननीय केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री, श्री प्रकाश जावड़ेकर ने हमारे गणतंत्र दिवस को मनाने के लिए राष्ट्रीय गौरव का आह्वान किया है । उन्होंने कहा "आइए हम एक नए भारत को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और स्वच्छ बनाएं...। एक नया भारत जातिवाद, आतंकवाद, गरीबी और भ्रष्टाचार से मुक्त हो । यह हमारे प्रधानमंत्री का संकल्प है और हम सभी इसे अपना राष्ट्रीय संकल्प बनाएं। आइए हम सभी 2022 तक इस न्यू इंडिया का निर्माण करें।

70 वां गणतंत्र दिवस समारोह

एमजीएनसीआरई ने बड़े उत्साह के साथ गणतंत्र दिवस का 70 वां वर्ष मनाया.। एमजीएनसीआरई की विभिन्न उपलब्धियों की गणना करते हुए एमजीएनएनआरई के अध्यक्ष महोदय ने आगे के मार्ग के लिए अजंडा भी दिया। उन्होंने देशभक्ति के जज्बे का आह्वान किया जो देश को आगे ले जाएगा। इस अवसर पर डॉ.सी. उमा महेश्वर राव, आईएएस (सेवानिवृत्त), एक विख्यात नौकरशाह, सदस्य सचिव श्री पी.मुरली मनोहर के साथ उपस्थित थे। डॉ.सी उमा महेश्वर राव ने शिक्षक, शिक्षा और एक अच्छे शिक्षक के गुणों पर बात की। आगे उन्होंने कहा कि किसी भी कार्य के "स्वामित्व" पर महत्त्व दिया जाय जो उसकी उपलब्धि की ओर ले जाता है। प्राध्यापक प्रेरण कार्यक्रम के सदस्यों के साथ बातचीत सत्र का आयोजन किया था । जिसमें उन्होंने कहा कि कुछ बाहरी मदद की प्रतीक्षा करने के बजाय, हमेशा खुद की मदद करना सबसे अच्छा है। अच्छी गुणवत्ता वाले छात्र भारत का भविष्य हैं। जो निस्वार्थ शिक्षकों से बाहर आते हैं। उन्होंने सलाह देते हुए कहा कि हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली आचार्यों पर निर्भर थी ... जिन्होंने उपदेश दिया था कि वे क्या सिखाते हैं। यह वही है जो आज की आवश्यकता है ।

संपादक की टिप्पणी

संवैधानिक जिम्मेदार पद गणतंत्र दिवस याद दिलाने का काम करता है। यह हमें हमारे कर्तव्यों और अधिकारों की याद दिलाता है "। एमजीएनसीआरई ने 70 वें गणतंत्र दिवस को बहुत प्रतिबद्धता और उत्साह के साथ मनाया। यह हमारा सौभाग्य भी था कि एमजीएनसीआरई टीम के अलावा, हमारे पास एफआईपी का (तीसरा) बैच पूर्ण उपस्थिति में भाग ले रहा था। सदस्य सचिव, श्री पी. मुरली मनोहर और डॉ.सी. उमामहेश्वर राव,आईएएस (सेवानिवृत्त),सिद्धि और अखंडता का एक अनुकरणीय उदाहरण, इस अवसर को प्राप्त किया और दिन को और अधिक यादगार बना दिया। एफडीपी और कार्यशालाओं और राउंडटेबल्स के अपने पिछले एजेंडे को जारी रखते हुए, हम सभी राज्यों में धीरे-धीरे और लगातार नई तालीम और सामुदायिक व्यस्तता पैदा कर रहे हैं। हमारे पास गतिविधियों का एक लाइनअप है जो अगले महीने में आगे बढ़ाया जाएगा। मैदान पर हमारे प्रोजेक्ट संयोजकों ने शानदार तरीके से नेटवर्क तैयार किया है और भारत के सभी राज्यों में प्रवेश करने में बहुत योगदान दिया है। मानव संसाधन विकास द्वारा हमें एक रोमांचक और चुनौतीपूर्ण कार्य एमबीए पाठ्यक्रम का विकास के साथ-साथ पर्यावरण स्वास्थ्य विज्ञान का भी कार्य सौंपा गया। अपशिष्ट प्रबंधन पर वैकल्पिक पाठ्यक्रम की सफलता पर सवारी,स्वच्छता और पर्यावरणीय स्वास्थ्य विज्ञान और अपशिष्ट में पीजी डिप्लोमा कोर्स प्रबंधन और पर्यावरणीय स्वास्थ्य विज्ञान "अब हम अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण स्वच्छता में एमबीए कार्यक्रम विकसित कर रहे हैं। श्री वीएलवीएसएस सुब्बा राव का एम्बीए प्रोग्राम के पीछे दूरदर्शी और दर्शन है। मुझे यह अवसर देने के लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ । हमने पाठ्यक्रम की समीक्षा, विश्लेषण और अंतिम रूप देने के लिए आईआईटी, आईआईएम, प्रतिष्ठित निजी व्यवसाय प्रबंधन स्कूलों, सरकारी और प्रतिष्ठित निकायों के प्रतिष्ठित शिक्षाविदों के साथ एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस एमबीए कार्यक्रम की शुरूआत करने के प्रयास सुचारू रूप से आगे बढ़ रहे हैं। प्राध्यापक प्रेरण कार्यक्रम (के तहत) हमारे एफडीसी में पीएमएमएमएनएमटीटी)हमने तीन बैचों को सफलतापूर्वक पूरा किया है । सभी बैचों के पास महत्वपूर्ण रास्ते होते हैं और हमारे प्रशिक्षण मापदंडों की वाक्पटुता होती है। हमारी सभी गतिविधियों का मूलमंत्र "प्रतिबद्धता" और अविश्वसनीय दृढ़ता है। हमारी प्रतिबद्धता के बयानों का प्रतिबिंब यह दर्शाता हैं हम कौन है ? हमारी पहचान का विवरण,जो हम अपने आप को मानते हैं और जो हम मानते हैं कि खुद बनने में सक्षम हैं। तो, हम आगे बढ़ते हैं !

डॉ.डब्ल्यू जी प्रसन्ना कुमार
अध्यक्ष, एमजीएनसीआरई

हम आप सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं देते हैं। पिछले 70 वर्षों के दौरान, भारत ने विभिन्न प्रकार की बाधाओं को दूर किया है और वैश्विक स्तरों पर मान्यता प्राप्त की है। इसलिए यदि हम इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि हमें क्या हासिल करना और उस पर गर्व करने की जरूरत है, तो हम सकारात्मक रूप से आगे बढ़ सकते हैं। भारत ने सामाजिक और तकनीकी रूप से विकसित किया है। हालाँकि, देश के कई ग्रामीण हिस्सों में जीवन को अभी भी पानी और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएं नहीं मिल रही हैं, लेकिन यह भी एक तथ्य है कि कई शहरों की गिनती वैश्विक स्तर पर स्मार्ट सिटी अंतर्गत होती है । भारत ने शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, साहित्य, संगीत, फिल्म, खेल और अंतरिक्ष में नई ऊंचाइयां हासिल की हैं। शिक्षा सभी कर्मों की कुंजी है, इसलिए शिक्षा क्षेत्र को परिष्कृत और पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। नेतृत्व विकास पर नई दिल्ली में 24 और 25 जनवरी को दो-दिवसीय कार्यशाला में केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से) का हाल ही में किया गया उद्घाटन कुलपतियों के लिए उच्च शिक्षा में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की दिशा में एक कदम है। राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (एनआईईपीए) द्वारा आयोजित कार्यशाला में संस्थागत और राष्ट्रीय स्तर पर विचारों, अनुभवों, केस स्टडी और कार्य योजनाओं को साझा करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। गुणवत्ता शिक्षक शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की ओर जाता है। स्वच्छता आगे बढ़ने का रास्ता है। गंगा नदी की सफाई पर हमारी पहल धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। नमामि गंगे मंच के सदस्यों ने तीसरे सप्ताह में मणिकरणिका घाट पर स्वच्छता अभियान चलाया। एक जनजागरण गंगा आरती की गई। सदस्यों ने गंगा के घाटों पर फैले कचरे को साफ किया। राष्ट्रीय संयोजक के रूप में, नमामि गंगे और गंगा विचार मंच, मैं सभी भारतीयों से स्वच्छता के राष्ट्रीय कारण में योगदान करने का आह्वान करता हूँ।

डॉ. भारत पाठक
उपाध्यक्ष

कैलेंडर का लोकार्पण

(श्री प्रकाश जावड़ेकर द्वारा एमजीएनसीआरई 2019 वार्षिक कैलेंडर का लोकार्पण किया गया)

वर्ष 2019 कैलेंडर का लोकार्पण की कुछ झलकियाँ विभिन्न राज्यों में

छत्तीसगढ़

गुजरात

तमिलनाडु

आंध्र प्रदेश

मध्य प्रदेश

केरल

गोवा

एफआईपी — एफडीसी, एमजीएनसीआरई में तीसरा प्राध्यापक प्रेरण कार्यक्रम

3 जनवरी को एमजीएनसीआरई हैदराबाद के प्राध्यापक विकास केंद्र में तीसरा प्राध्यापक प्रेरण कार्यक्रम (पीएमएमएमएनएमटीटी) शुरू हुआ । यह पूर्णकालिक आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम था, जो एमजीएनसीआरई के लिए पहला था। मुख्य अतिथि प्रोफेसर सी. वेंकटैया, रजिस्ट्रार ब्रौ ने प्रतिभागियों के उत्साह पर खुशी और संतुष्टि व्यक्त की इसके साथ-साथ कार्यक्रम के लिए एक प्रभावी शिक्षाशास्त्र को डिजाइन करने में अपने शानदार योगदान के लिए एमजीएनसीआरई की सराहना की। कार्यप्रणाली के भाग के रूप में, शिक्षाविदों के प्रशासनिक कार्यों के लिए कौशल के साथ प्रायोगिक अधिगम प्राथमिक है ।इसमें परीक्षाएं, छात्रावास प्रबंधन, पाठ्येतर गतिविधि प्रबंधन, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, असाइनमेंट, फील्डट्रीप्स का आयोजन और प्रशासन कार्यक्रम शामिल हैं । प्रत्येक गतिविधि को सीखने की गतिविधि के रूप में लिया जाना चाहिए और आवश्यक भावनात्मक खुफिया के साथ अभ्यास किया जाना चाहिए।महात्मा गांधी ने सही कहा, “भारत का तरीका यूरोप का नहीं है, भारत कलकत्ता और बॉम्बे नहीं है। भारत गाँवों में रहता है। ” और “ शिक्षा का अर्थ है-बच्चे और मनुष्य में सर्वश्रेष्ठ से हटकर एक सर्वांगीण रेखाचित्र; शरीर, मन और आत्मा ”।

एफडीपी — 2 से 8 जनवरी, 2019 को सामुदायिक-विश्वविद्यालय अनुबंध और समुदाय आधारित भागीदारी अनुसंधान पर प्राध्यापक विकास कार्यक्रम

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद (एमजीएनसीआरई) और पीआरआईए अंतर्राष्ट्रीय अकादमी (पीआईए)द्वारा उस्मानिया विश्वविद्यालय के (ओयूसीआईपी)अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम केंद्र में आयोजित किया गया ।

सामुदायिक-विश्वविद्यालय सगाई और समुदाय आधारित भागीदारी अनुसंधान कार्यक्रम का उद्घाटन अध्यक्ष, एमजीएनसीआरई द्वारा किया गया था। सुश्री सरवानी पांडे ने अतिथि और वक्ता के रूप आए हुए डॉ.राजेश टंडन, एशिया में भागीदारी अनुसंधान (पीआरआईए) के अध्यक्ष का परिचय दिया । डॉ. राजेश टंडन एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित नेता के साथ-साथ सहभागी अनुसंधान और विकास के अभ्यासी भी हैं । वह सहभागी अनुसंधान के संस्थापक पिता में से एक हैं। उन्होंने सोसाइटी फॉर पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया (पीआरआईए)की स्थापना की । 1982 से दक्षिण एशिया में एक जमीनी स्तर की पहल को सहायता प्रदान करने वाली एक स्वैच्छिक संस्था के रूप में इसका मुख्य कार्यकलाप जारी है। सहभागी अनुसंधान (सअ), पीआरआईए के कार्य का आधार है। यह एक कार्यप्रणाली है जिसमें बौद्धिक और शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ अनुभवात्मक ज्ञान भी शामिल है। व्यावहारिक और अकादमिक कार्यों के बीच की खाई को निपटाने के उनके काम को तब और समर्थन मिला । जब उन्हें 2012 में यूनेस्को के सह-अध्यक्ष के रूप में समुदाय आधारित अनुसंधान और उच्च शिक्षा में सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में नियुक्त किया गया। यूनेस्को की अध्यक्षता ने और यूनेस्को की वैश्विक नेतृत्व ने 'ज्ञान समाजों के निर्माण में सहायता करने वाले देशों की मुख्य भूमिका निभाई।

डॉ.टंडन ने अपने व्यख्यान में एमजीएनसीआरई के साथ दीर्घकालिक संबंध के बारे में बात करते हुए कहा कि वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली समाज और समुदाय से अलग हो रही है। उच्च-शिक्षा संस्थानों को समाज के ज्ञान उत्पादन-यंत्र और संरक्षण केंद्रों के रूप में सेवा करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में, उच्च-शिक्षा संस्थान केवल ज्ञान उत्पादन संस्थान बन रहे हैं, जिनमें ग्रामीण समाज के लिए कोई प्रायोगिक शिक्षण तत्त्व नहीं हैं। विश्वविद्यालय ऐसे पाठ्यक्रम तैयार कर रहे हैं, जो गैर- भारतीय बाजारों की सेवा कर रहे हैं। इस पाठ्यक्रम में ग्रामीणों के ज्ञान की कोई मान्यता नहीं है। एमजीएनसीआरई के परियोजना समन्वयक भारत भर में प्रतिभागियों के रूप में कार्य कर रहे थे। जिसे उन्होंने अपने विश्वविद्यालयों में प्राध्यापक विकास कार्यक्रमों के समय, अपने क्षेत्र कार्य के दौरान जो अनुभव उन्होंने किया था उसे ही साझा किया।

- कार्यक्रम समन्वयकों के लिए उनके संचार और रिपोर्ट लेखन कौशल को बेहतर बनाने में एफडीपी सीखने का एक महान अनुभव था ।
- इस कार्यक्रम में अभ्यास और भूमिका निभाना सिखाया गया, कैसे बातचीत कौशल में सुधार किया जाए ? अधिकारियों से कैसे संपर्क किया जाए ? कैसे समझा जाए ?
- एफडीपी ने प्रतिभागियों में क्षमता निर्माण और आत्मविश्वास में मदद की। उच्च शैक्षिक संस्थानों के लिए सामुदायिक समुदाय अनुबंध पाठ्यक्रम अनुमोदन ने निकट आने में अपने कौशल का सम्मान किया ।
- सहभागियों ने सामुदायिक अनुबंध में भागीदारी के महत्व को सीखा और यह पारंपरिक अनुसंधान विधियों से अलग कैसे है।
- उन्होंने सामुदायिक सहभागिता में भागीदारी और अनुसंधान विधियों का महत्व सीखा ।

आंध्र प्रदेश

एफडीपी नई तालीम पर एफडीपी – डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, श्रीकाकुलम - 2 जनवरी से 8 तक

माननीय कुलपति प्रो के रामजी ने कहा कि उच्च शिक्षा संस्थानों को आस-पास के समाजों से जोड़ा जाना चाहिए। प्रत्येक को अपने संस्थागत विकास के लिए प्रयास करना होगा। एफडीपी के कार्यक्रम में बी.एड कॉलेजों के संकायों ने भाग लिया । इसका उद्घाटन बी.आर.अम्बेडकर विश्वविद्यालय, श्रीकुलम कॉलेज ऑफ आर्ट्स के प्राचार्य डॉ.जी.तुलसी राव द्वारा किया गया। प्रतिभागियों को अनुभवात्मक अधिगम और कार्य शिक्षा के बारे में दिवाकर ने नई तालीम का परिचय दिया ।

बी.आर.अम्बेडकर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, श्रीकाकुलम ने प्रायोगिक अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम में उत्सुकता के साथ रुचि प्रदर्शित की।

पीएलए के हिस्से के रूप में ग्राम सालहुडम का दौरा

रसोई अपशिष्ट,गोबर,पानी का उपयोग कर जैविक खाद की तैयारी ।

आंध्र प्रदेश

एफडीपी एफडीपी सामुदायिक सहभागिता पर - डॉ. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय, श्रीकाकुलम, 21 जनवरी से 27 जनवरी

पीएलए के तरीकों की व्याख्या करते हुए बीआरएयू के माननीय कुलपति

श्रीकाकुलम में ग्रामीण समुदाय अनुबंध शिक्षा के हिस्से के रूप में ग्रामीण आजीविका पर चर्चा करते हुए ।

गुडेम, अचुतपुरम,अय्यप्पगुडा, कुंडुवनिपेटा, कुप्पिली, मुरापका गाँव का दौरा

आंध्र प्रदेश

एफडीपी — एफडीपी सामुदायिक अनुबंध पर - आदिकवि नन्नय्या विश्वविद्यालय, राजमंडरी जनवरी 23 से 29 जनवरी तक

प्राध्यापक विकास कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में प्रो.सुरेश वर्मा,प्राचार्य डॉ.के.सुब्बा राव, प्रिंसिपल और बीओएस के अध्यक्ष, और डॉ. एम.गोपाला कृष्णा, असिस्ट प्रो. भी उपस्थित थे। प्रतिभागियों ने महसूस किया कि उन्होंने नई शिक्षण अवधारणाओं और गांधीजी की शिक्षा के बारे में बहुत कुछ सीखा है। उन्हें फिर से शिक्षा के इतिहास और नई तकनीकों को आजमाने के लिए प्रेरित किया गया। वे आश्वस्त थे कि नई तालीम ही एकमात्र रास्ता था और गाँव की सामुदायिक सहभागिता शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए।

बिहार

एफडीपी — नई तालीम पर एफडीपी - पटना विश्वविद्यालय, पटना - 6 जनवरी से 12 जनवरी तक

श्री रास बिहारी प्रसाद सिंह, कुलपति, पटना विश्वविद्यालय ने एफडीपी के 7 वें दिन का उद्घाटन किया।

हरियाणा

एफडीपी — नई तालीम पर एफडीपी - यूसीईके, कुरुक्षेत्र, 15 जनवरी से 21 जनवरी तक

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्राध्यापक विकास कार्यक्रम-यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ एजुकेशन में समूह कार्य प्रक्रिया ।

उत्तर प्रदेश

एफडीपी — नई तालीम पर एफडीपी - के.एन. कैम्पस, सुल्तानपुर 16 जनवरी से 22 जनवरी

सुल्तानपुर में नई तालीम पर एफडीपी प्रयोगात्मक अध्ययन - अध्ययन में कोई पदानुक्रम नहीं

एफडीपी — नई तालीम पर एफडीपी - एनआईटी दुर्गापुर, 10 जनवरी से 16 जनवरी तक

10 जनवरी को एनआईटी दुर्गापुर के डी एम सेन सभागार में एनएसएस कार्यक्रम अधिकारियों के लिए ग्रामीण विसर्जन और समुदाय अनुबंध पर सात दिवसीय प्राध्यापक विकास कार्यक्रम (एफडीपी) आयोजित किया गया । कार्यक्रम का उद्घाटन एनआईटी दुर्गापुर के मानविकी और समाज विज्ञान विभाग के असोसिएट प्रो.डॉ. श्री. क्रिशन रॉय ने किया । वह भी एनएसएस कार्यक्रम के समन्वयक हैं । डॉ.श्रीकृष्ण राय ने कहा "मातृभाषा के माध्यम से हस्तांतरित होने पर शिक्षा प्रभावी होती है और विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम पर इस तरह की शुरुआत करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है" और आगे कहा केंद्रीय सरकार द्वारा इस तरह का क़दम उठाना स्वागत की बात है । मुख्या अतिथि और वक्ता के रूप में एनवाईकेएस के राज्य निदेशक, श्री एनके नाइक उपस्थित थे । श्री एन.के.नाइक ने अपने महत्वपूर्ण व्याख्यान में एमजीएनसीआरई की सराहना करते हुए कहा कि "जहां गांधी हैं; वहाँ ग्रामीण भारत है और एमजीएनसीआरई अपने नाम से ही दोनों को पूरी तरह से जोड़ता है। मैं इसलिए बहुत खुश हूँ । " उन्होंने भारत के गांवों में सामुदायिक सहभागिता के लिए ग्रामीण विसर्जन अभ्यास के अनुबंध की जरूरत पर बल दिया । इस अवसर पर सीईसी, एनआईटी दुर्गापुर के अध्यक्ष प्रो. केसी घन्टा सम्मान के अतिथि थे । उन्होंने ने अपने भाषण में ग्रामीण समुदाय के विकास के लिए तीन उत्प्रेरक यानी आधारभूत सुविधाओं का विकास, तकनीकी विकास और मानसिक विकास का उल्लेख किया । पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों जैसे बीरभूम, आसनसोल, पुरबा बर्दवान, बांकुरा, दुर्गापुर के एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारियों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया ।

प्राध्यापक विकास कार्यक्रम के हिस्से के रूप में सहभागी अभ्यास और प्रक्रिया

एफडीपी — नई तालीम पर एफडीपी - जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता, 13 जनवरी से 19 जनवरी तक

प्रो नंदा, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग जादवपुर विश्वविद्यालय, प्रतिभागियों के साथ बातचीत करते हुए ।

नई तालीम पर एफडीपी 13 जनवरी को पनिहाटी महाविद्यालय में शुरू हुई। नई तालीम पर एफडीपी 13 जनवरी को पनिहाटी महाविद्यालय में शुरू हुई। डॉ. अमूल्य कुमार आचार्य, कार्यक्रम समन्वयक ने मंच पर उपस्थित अतिथियों का परिचय दिया और संबंधित विषय से चर्चा शुरू की । स्वागत भाषण महाविद्यालय की सम्मानित प्राचार्य डॉ.मुक्ति गांगुली द्वारा दिया गया। महाविद्यालय के शासी निकाय के माननीय अध्यक्ष, डॉ.अमित कुमार विश्वास ने अधिगम पर अनुभव साझा किया । पश्चिम बंगाल कल्याणी विश्वविद्यालय, शिक्षा विभाग एसआरसी के अध्यक्ष और प्रो. दिब्येंदु भट्टाचार्य ने अनुभवात्मक अधिगम के ऐतिहासिक दृष्टिकोण, गांधी की शिक्षा की अवधारणा और इस संबंध में सरकार द्वारा शुरू की गई नीतियों के बारे में बात की। इस कार्यक्रम में विभिन्न पृष्ठभूमि के प्रतिभागी थे और इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों जैसे कलकत्ता विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, कल्याणी विश्वविद्यालय आदि से संबद्ध कॉलेजों के शिक्षा और संबद्ध विभागों के प्राध्यापक सदस्य शामिल थे। एक समग्र और सहयोगी दृष्टिकोण लिया गया और नई तालीम की प्रासंगिकता प्रायोगिक अधिगम पर बड़े विस्तार से चर्चा की। प्रो. बिष्णुपद नंदा, प्रोफेसर और प्रमुख, शिक्षा विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय ने इस पर एक जानकारीपूर्ण और व्यावहारिक बात की । भारत में विभिन्न शैक्षिक प्रणालियों का विकास और गांधी की नई तालीम की अवधारणा की प्रासंगिकता पर भी चर्चा हुई। डॉ। नंदा ने सतत विकास, अनुभवात्मक शिक्षा और नई तालीम के महत्व को बताया। प्रो। पार्थ सारथी मल्लिक ने वर्धा और सेवाग्राम के अनुभव को साझा किया । इसके साथ-साथ और समाज में काम की पहचान की आवश्यकता पर भी चर्चा की।

श्रम की मान्यता, उसके अनुसार, अनुभवात्मक अधिगम के स्रोत पर निहित है और यह जीवन को एक प्रकार का पूरा होने देता है। उन्होंने एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिते हुए कहा कि ज्ञान के माध्यम के विचार पर चर्चा की जो उसके अनुसार शिक्षा के माध्यम से अधिक महत्वपूर्ण है । भुवनेश्वरी के साथ जो समूह गया था उन्होंने बालिका विद्यामंदिर और सुशील कृष्णा हाई स्कूल फॉर बॉयज़ और स्कूल आधारित गतिविधियों से संबंधित उत्पादक टीम का काम किया । जिसके माध्यम से वे छात्रों और एफडीपी प्रतिभागियों की मदद से शिल्प और सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्यों से संबंधित विभिन्न कौशल सीख सकते हैं। डॉ. बिजोन सरकार ने गेस्टऑफ ऑनर के रूप में सहभागी अभ्यास और प्रक्रिया (पीएलए) पर एक व्याख्यान दिया, जो स्कूलों और गांवों में लागू किया जाना था। नंबर 1, बिलकंडा, पी.ओ. कोर्नो मधबपुर, पी.एस. घोला, जिला.उत्तर 24 पीजी.,डब्ल्यूबी के लिए ग्राम की यात्रा की व्यवस्था की गई थी । पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय के डॉ. अभिजीत कुमार पाल, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग ने गांधीजी की शिक्षा और गतिविधि आधारित शिक्षा की अवधारणा की निरंतर प्रासंगिकता के बारे में बात की। विश्वभारती विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के एसोसिएट प्रो. डॉ। आशीष श्रीवास्तव ने 1990 के दशक में भारत में शैक्षिक प्रणालियों और नीतियों में बड़े बदलावों पर एक सूचनात्मक और चिंतनशील व्याख्यान दिया, जो पिछले चार दशकों की तुलना में तुलनात्मक रूप से अधिक गतिशील हैं। उन्होंने भारत के विकास की दर के मानचित्रण की नई पद्धति का भी उल्लेख किया, अर्थात् एचडीआई जिसने जीडीपी को प्रतिस्थापित किया । और 1999 में मानव विकास रिपोर्ट के बाद एक प्रतिमान के रूप में लिया गया था ।

एमबीए अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण स्वास्थ्य विज्ञान पाठ्यचर्या विकास पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला एएससीआई 11 जनवरी से 12 जनवरी तक

11-12 जनवरी, 2019 के दौरान एमबीए अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण स्वास्थ्य विज्ञान पाठ्यचर्या विकास पर राष्ट्रीय कार्यशाला का बंजारा हिल्स, हैदराबाद के एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज (अएससीआई) में आयोजन किया गया । कार्यशाला के पहले ही, एक मसौदा पाठ्यक्रम को एमजीएनसीआरई टीम और विषय विशेषज्ञ के द्वारा विचार-विमर्श कर तैयार किया गया था । बहुप्रचारित एमबीए प्रोग्राम के कार्यान्वयन के लिए मिशन अभिविन्यास देने की आवश्यकता को स्वीकार करना और पाठ्यक्रम को ताकत और मूल्य देना उद्देश्य हैं । प्रबंधन विषय विशेषज्ञों के अलावा एमजीएनसीआरई ने आईआईएम, आईआईटी,एनआईटी, प्रतिष्ठित निजी सहित भारत के प्रमुख बिजनेस स्कूलों के निपुण शिक्षाविदों के साथ-साथ बी-स्कूल, गैर सरकारी संगठन, सरकार और स्थानीय निकाय को आमंत्रित करके कार्यशाला का संचालन किया।

उद्देश्य

- प्रख्यात एक मंच पर लाने के लिए प्रतिष्ठित से शिक्षाविदों प्रबंधन बिजनेस स्कूल और गंभीर रूप से प्रौद्योगिकी संस्थानों ड्राफ्ट पाठ्यक्रम का विश्लेषण करें ।
- प्रसारित मसौदे के आधार पर एमबीए पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए एक कार्य योजना विकसित और अंतिम रूप देना ।
- त्वरित समीक्षा और इनपुट्स के लिए पाठ्यक्रम ।
- प्रीमियर व्यवसाय बनाना प्रबंधन संस्थान एमएमबीए का कोर्स करते हैं ।
- जो कोर्स कर सकते हैं, उनके समर्थन को सूचीबद्ध करना ।
- कोर्स वर्क, एफडीपी काम लेखन के लिए संसाधन व्यक्तियों को सूचीबद्ध करना ।
- संस्थागत सहयोग लेना ग्रामीण प्रबंधन / सहभागिता के लिए काम करता है ।
- संस्थागत स्तर पर अनुवर्ती गोल मेज, बुद्धिशीलता सत्र, कार्यशालाएं और संकाय विकास कार्यक्रम का आयोजन करना।

गेस्ट ऑफ ऑनर, **श्री सुब्बा राव,** सीनियर एमएचआरडी के आर्थिक सलाहकार ने विभिन्न संस्थानों की मौजूदगी की "शानदार" उपस्थिति पर खुशी व्यक्त की। उनके भाषण के कुछ अंश - स्वच्छता धीरे-धीरे गति पकड़ रही है, आधिकारिक रूप से, कदम से कदम मिला है। पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा और अब एमबीए प्रोग्राम के लिए एकल सेमेस्टर ऐच्छिक के रूप में पाठ्यक्रम का विकास शुरू हुआ । पाठ्यक्रम की उत्पत्ति प्रधान मंत्री की स्वच्छता प्रक्रिया से शुरू हुई थी। एक पुरानी कहावत है - "देहो देवलयां प्रोक्तो .. जीव देव सनातन (शरीर ही मंदिर है और स्वंय ईश्वर स्वयं है) "इसका अर्थ है कि ईश्वर आप में रहता है और ईश्वर सभी के भीतर है। केवल अहसास समय अलग है। हमें आंतरिक रूप से एक स्वच्छ शरीर के रूप में स्वच्छ मन होना चाहिए। स्वच्छता, भक्ति से भी बढ़कर है। आंतरिक रूप से स्वच्छ विचार प्रक्रियाएं तत्काल पर्यावरण को स्वच्छ रखती हैं। बोध का योग है कि परमात्मा तुम्हारे भीतर है। "जनता में जागरूकता पैदा करने के लिए पूर्वाग्रह पैदा करना चाहिए। "स्वच्छता समाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, जिससे अर्थव्यवस्था और देश का विकास होता है। यह देश की छवि को बदलता है। यह हमारे देश का चेहरा और धारणा है। यह मानसिकता को प्रभावित करता है। स्वच्छ उच्च शिक्षा संस्थानों में उपकरण और सुसंगत और सार्थक प्रबंधकीय प्रथाओं से लैस मूल्य प्रणाली शामिल हैं। इस कार्यक्रम को अगले स्तर तक ले जाने की क्षमता है। सेमेस्टर 1 में प्रबंधन घटक है जबकि सेमेस्टर 2 में फील्ड घटक है। प्रबंधन घटक अपशिष्ट प्रबंधन उद्योग पद के लिए उन्मुख है। इसलिए, विशेषज्ञों का इनपुट महत्वपूर्ण है। स्वच्छता में अंतःविषय दृष्टिकोण है। एमएचआरडी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों (जैसे जेम्स मैडिसन ..) के साथ टाई अप भी तलाश रहा है। एक टीम को अंतरराष्ट्रीय स्तर की विश्वविद्यालयों में प्रस्तुतियाँ देने के लिए भेजा जा सकता है । इस तरह के विशेष टाई अप इस एमबीए प्रोग्राम को विश्व स्तर का बना सकते हैं और देश को वैश्विक नोटिस पर ला सकते हैं। अब की बार उठाया गया है और कार्यक्रम पर एक नया जोर लगाया गया है।**श्री परमेस्वरन अय्यर,** सचिव, पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय, एमएचआरडी, इस एमबीए कार्यक्रम से काफी प्रभावित हैं प्रयास और इस "कुछ विशेष" कार्यक्रम के साथ जुड़े रहने का इरादा व्यक्त किया।यह एमबीए प्रोग्राम वैश्विक विश्वविद्यालयों के समतुल्य हो सकता है और मांगों के साथ इसका उन्नयन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यूजीसी की संबद्धता प्राप्त करना चिंताजनक नहीं है और मंत्रालय टाई अप की सुविधा के लिए तैयार होगा। श्री सुब्बा राव ने प्रतिभागियों को नीचे आने के लिए धन्यवाद दिया और चर्चाओं के एक अच्छे और फलदायी दौर के लिए उनकी उत्तेजना को बढ़ाया। गेस्ट ऑफ ऑनर, हैदराबाद मेट्रोपॉलिटन अथॉरिटी के कमिश्नर **डॉ.बी जनार्दन रेड्डी** ने वेस्ट के विषय के बारे में बताया, जो उनके दिल के बहुत करीब है।

उन्हों ने जो महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान केंद्रित किया निम्न हैं-

- चिंता का प्रमुख क्षेत्र स्रोत पर अलगाव है।
- ज्ञान हस्तांतरण के बिना कितना खर्च किया जाता है, पैसे की बर्बादी है।
- शहरी क्षेत्रों में रहने की जगह बहुत दुर्लभ है, इसलिए शहरी घरों में कंपोज़िंग एक चुनौती है।
- पाठ्यक्रम के विकास के लिए बहु अनुशासनिक दृष्टिकोण आवश्यक है ।

किसी भी पाठ्यक्रम को तकनीक के अनुसार बदलने की जरूरत है और एक निश्चित मानसिकता को बंद किया जाना चाहिए।हमें बदलावों को स्वीकार करना चाहिए प्रौद्योगिकी और पाठ्यक्रम में होना चाहिए तदनुसार निरंतर आर एंड डी के साथ संशोधित। प्रतिभागियों के साथ-साथ उन लिखित सबमिशन के दौरान विचारों के ट्रेन

के माध्यम से जाना, जो उन्होंने व्यक्तिगत रूप से और कार्यशाला में समूहों में किए, उनमें से कई संबंधित शैक्षणिक तरीकों के एक या एक से अधिक पहलुओं के लिए हैं।प्रतिभागियों ने अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण स्वच्छता में एमबीए कार्यक्रम की आवश्यकता को स्वीकार किया। वे सभी एमबीए प्रोग्राम का स्वागत करने के लिए लग रहे थे लेकिन परिचय भाग और प्रत्येक पाठ्यक्रम से जुड़े क्रेडिट से आशंकित थे।प्रतिभागियों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण के माध्यम से चलने वाला सामान्य धागा यह था कि एमबीए प्रोग्राम के शीर्षक को स्वीकार्यता के दौरान पाठ्यक्रम की सामग्री के अनुसार संशोधित किया जाना चाहिए।

तेलंगाना -
पलामुर विश्वविद्यालय, 2 जनवरी

प्रो.राजरत्नम, कुलपति

मध्य प्रदेश -बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, 17 जनवरी

प्रो.आर.जे.राव, माननीय कुलपति ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और एमजीएनसीआरई के साथ सहयोग का स्वागत किया।

उत्तर प्रदेश - मेरठ, 29 जनवरी

झारखंड - रांची वशि्वविद्यालय, 30 जनवरी

गुजरात - गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, 28 जनवरी

आंध्र प्रदेश - आदिकवि नन्नाया विश्वविद्यालय 31 जनवरी

तेलंगाना - उस्मानिया विश्वविद्यालय, 31 जनवरी

गोल मेज

कश्मीर विश्वविद्यालय 29 जनवरी

(कश्मीर विश्वविध्यालय के प्रो.तलत अध्यक्ष के रूप में)

(डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, एमएचओडब्ल्यू, इंदौर 22 जनवरी)

(देवी अहल्या विश्व विद्यालय, इंदौर, मप्र २२ जनवरी)

(विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन 23 जनवरी)

(माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, भोपाल)

(केआईआईटी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, 24 जनवरी)

(रावेन्शॉ विश्वविद्यालय, कटक 24 जनवरी)

ओडिशा - आईएमआईएस भुवनेश्वर (24 जनवरी) और उत्कल विश्वविद्यालय (24 जनवरी)

अन्नामलाई विश्वविद्यालय, चिदंबरम 23 वें जनवरी, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में 22 वें जनवरी को राउंड टेबल्स आयोजित किए गए।

(रांची विश्वविद्यालय, झारखंड - 25 जनवरी)

(एनआरसी केंद्र, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, 8 जनवरी)

एफडीपी चल रही है.. गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, 28 जनवरी से 3 फरवरी, सीसीएस वशि्वविद्यालय, मेरठ, 30 जनवरी से 5 फरवरी

सत्यमेव जयते

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

Where there is Rural Wellbeing there is Universal Prosperity

5-10-174, शाकर भवन, ग्राउंड फ्लोर, फ़तेह मैदान रोड, बंद कॉलोनी, आदर्श नगर, हैदराबाद, तेलंगाना - 500 004. तेलंगाना राज्य. दूरभाष: 040-23422112, 23212120, फैक्स: 040-23212114 ई-मेल: editor@ncri.in, वेबसाइट: www.mgncre.in

संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यूजी प्रसन्ना कुमार, अध्यक्ष एमजीएनसीआरई, डॉ. डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया वी और शिवराम जी, श्री पी मुरली मनोहर सदस्य-सचिव एमजीएनसीआर द्वारा प्रकाशित